RASHTRIYA INDIAN MILITARY COLLEGE, DEHRADUN

Rashtriya Indian Military College (RIMC) was founded on 13 March 1922 with the object of providing training to boys of Indian domicile wishing to become officers in the Armed Forces. The genesis of the institution lay in the fact that a concerted push for the Indianisation of Military Leadership of the Armed Forces of India came from the incumbent political establishment.

Catering to the legitimate military aspirations of Indians and the persistent political push to allow representation of able and deserving youth in the Defence Services of the Crown, the 'Prince of Wales Royal Indian Military College' was founded on 13 March 1922 by the then Prince of Wales Prince Edward VIII, duke of Windsor. Upon completing the course of instruction, boys from the PWRIMC were further sent to pre-commission training establishments in the UK like the Royal Military Academy Sandhurst and RAF Cranwell.

RIMC is an Inter Service Category 'A' establishment administered through the Army Training Command, Shimla. It is a feeder institution to the National Defence Academy and the Naval Academy while also enabling cadets to join the Defence Services through any other entry scheme. The College has an all India footprint with select eligible cadets being drawn from all corners of the country which translates into representation of each State of the nation and most Union Territories. The RIMC lends itself to train, educate and motivate cadets to ensure a career in the military is their natural preferred calling. Every activity in the College is objective-based, well thought out and precisely timed to mould future leaders.

Rimcollians, as RIMC alumni are called, have won the highest gallantry awards of pre and post independent India. Lt Gen PS Bhagat won the Victoria Cross and Maj Somnath Sharma was the first recipient of the Param Vir Chakra in India. General KS Thimayya, a distinguished alumnus, was honoured with the Padma Bhushan. In addition to the VC and PVC, the Rimcollians have been conferred with 03 Orders of the British Empire, 03 Members of the British Empire, 04 Distinguished Service Orders, 02 Distinguished Flying Crosses, 13 Military Crosses, 02 Sarvottam Yudh Seva Medals, 02 Uttam Yudh Seva Medals, 59 Param Vishisht Seva Medals, 02 Maha Vir Chakras, 04 Kirti Chakras, 02 Padma Shri, 82 Ati Vishisht Seva Medals, 15 Vir Chakras, 12 Yudh Seva Medals, 07 Shaurya Chakras, 123 Sena/ Nao Sena/ Vayu Sena Medals, 04 President's Police and Fire Services Medals and 99 Vishisht Seva Medals amongst others.

RIMC's crowning glory remains that it has given four Chiefs of Army Staff and two Chiefs of the Air staff to India and two Chiefs of Air Staff and a Commander-in-Chief of Army in Pakistan. As on March 2021, a total of 4274 students have joined RIMC of which more than 2600 are proudly serving in the Armed Forces of the nation. This diverse and eclectic sprinkling of Rimcollians across both sides of the border has contributed to their respective nation building as well as friendly overtures on occasions.

The College has dedicated its existence to producing leaders of mettle & resolve and they have gone on to shape the fledgling native military leadership in the nation– a leadership that has shaped the Indian Armed Forces that steered the nation to decisive to hard fought victory in wars and numerous operations. The institution's contribution to the military leadership has in its own way contributed to the cause of nation building.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Rashtriya Indian Military College (RIMC), Dehradun on its Centenary year.

Credits :

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet : Smt. Nenu Gupta

Text : Referenced from contents provided by the proponent.

डाक विभाग
Department of Posts

विवरणिका BROCHURE

राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज, देहरादून
RASHTRIYA INDIAN MILITARY COLLEGE, DEHRADUN

शताब्दी वर्ष 1922-2022 Centenary Year

राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज, देहरादून

राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज की स्थापना 13 मार्च, 1922 को की गई। इसकी स्थापना का उद्देश्य सशस्त्र सेनाओं में अधिकारी बनने के इच्छुक भारतीय मूल के किशोरों को प्रशिक्षण प्रदान करना था। इस संस्था की स्थापना की मूल अवधारणा का सूत्रपात तत्कालीन राजनीतिक नेतृत्व की ओर से किया गया, जिसका समन्वित प्रयास यह था कि भारत की सशस्त्र सेनाओं के सैन्य नेतृत्व को भारतीयता के सांचे में ढाला जाए।

भारतीयों की उचित सैन्य महत्वाकांक्षाओं तथा शाही (क्राउन) रक्षा सेवाओं में योग्य एवं दक्ष किशोरों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने को लेकर राजनीतिक जगत द्वारा दिए गए बल को ध्यान में रखते हुए तत्कालीन प्रिंस ऑफ वेल्स प्रिंस एडवर्ड VIII अर्थात् ड्यूक ऑफ विंडसर द्वारा 13 मार्च, 1922 को "प्रिंस ऑफ वेल्स रॉयल इंडियन मिलिट्री कॉलेज" की स्थापना की गई। अनुदेशक पाठ्यक्रम पूरा कर लेने के पश्चात्, प्रिंस ऑफ वेल्स रॉयल इंडियन मिलिट्री कॉलेज के प्रशिक्षुओं को आगे के प्रशिक्षण हेतु यूके स्थित प्री–कमीशन प्रशिक्षण संस्थानों जैसे द रॉयल मिलिट्री अकादमी सैंडहर्स्ट तथा आरएएफ क्रेनवल में भेजा जाता था।

राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज (आरआईएमसी), सैन्य प्रशिक्षण कमांड, शिमला के प्रशासकीय नियंत्रणाधीन 'ए' श्रेणी का एक अंतर–सेवा संस्थान है। यह राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (एनडीए) तथा नौसेना अकादमी (एनए) की एक फीडर संस्था है, जोकि कैडेटों को अन्य भर्ती योजनाओं के माध्यम से भी रक्षा सेवाओं में शामिल होने के लिए सक्षम बनाती है। यह एक अखिल भारतीय स्तर का कॉलेज है जिसमें देश के कोने–कोने से पात्र कैडेटों का चयन किया जाता है। ये कैडेट देश के लगभग प्रत्येक राज्य और अधिकतर संघ राज्यक्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं। राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज अपने कैडेटों को प्रशिक्षण, शिक्षण तथा प्रोत्साहन प्रदान करता है, ताकि उनमें यह मूल भावना जागृत हो कि सैन्य सेवा ही उनके जीवन का वास्तविक उद्देश्य है। इस कॉलेज का प्रत्येक कार्यकलाप सुनिर्धारित लक्ष्य पर आधारित, सुनियोजित और इस प्रकार समयबद्ध रूप से तैयार किया जाता है ताकि इन कैडेटों को भविष्य के सेनानायकों के सांचे में ढाला जा सके। उद्देश्यपरक, सुविचारित तथा भविष्य के अधिनायकों, अग्रणियों को समय से ढालने वाले होते हैं।

राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज से उतीर्ण छात्रों को रिम्कोलियन कहा जाता है। यहां से निकले यशस्वी छात्रों ने स्वतंत्रता–पूर्व भारत और स्वातंत्र्योत्तर भारत के सर्वोच्च वीरता पुरस्कार प्राप्त किए हैं। लेफ्टि. जनरल पी.एस. भगत ने विक्टोरिया क्रॉस प्राप्त किया और मेजर सोमनाथ शर्मा भारत में परमवीर चक्र प्राप्त करने वाले पहले शूरवीर बने। यहां के यशस्वी छात्र जनरल के एस थिमैय्या को पद्म भूषण से अलंकृत किया गया। वीर चक्र तथा परम वीर चक्र के अतिरिक्त, रिम्कोलियनों को 03 ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर, 03 मेम्बर्स ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर, 04 विशिष्ट सेवा ऑर्डर, 02 विशिष्ट फ्लाइंग क्रॉस, 13 मिलिट्री क्रॉस, 02 सर्वोत्तम युद्ध सेवा मेडल, 02 उत्तम युद्ध सेवा मेडल, 59 परम विशिष्ट सेवा मेडल, 02 महावीर चक्र, 04 कीर्ति चक्र, 02 पद्म श्री, 82 अति विशिष्ट सेवा मेडल, 15 वीर चक्र, 12 युद्ध सेवा मेडल, 07 शौर्य चक्र, 123 सेना/नौसेना/वायु सेना मेडल, 04 प्रेसीडेंट्स पुलिस तथा फायर सर्विस मेडल के अतिरिक्त 99 विशिष्ट सेवा मेडलों से भी सम्मानित किया गया है।

राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि यह रही है कि इसने भारत को चार थल सेना प्रमुख तथा दो वायु सेना प्रमुख तथा पाकिस्तान को दो वायुसेना प्रमुख तथा थल सेना के कमांडर–इन–चीफ दिए हैं। मार्च, 2021 तक राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज से कुल 4274 छात्र शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं, जिनमें से 2600 से अधिक छात्र गर्व से देश की सशस्त्र सेनाओं में सेवारत हैं। सरहद के दोनों ओर रिम्कोलियन छात्रों की इस विविधतापूर्ण मौजूदगी ने दोनों ओर के राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और अनेक अवसरों पर मैत्रीपूर्ण प्रयास भी किए हैं।

इस कॉलेज ने अपनी शुरुआत से ही देश को ऐसे शूरवीर व दृढ़ संकल्प सेनानायक दिए हैं, जिन्होंने राष्ट्र की उभरती सैन्य शक्ति को सुदृढ़ आकार प्रदान किया है। इन्हीं शूरवीर सेनानायकों के नेतृत्व में भारतीय सैन्य बलों ने अनेक भीषण युद्धों तथा अनेकानेक फौजी कार्रवाइयों में निर्णायक विजय प्राप्त की है। इस प्रकार सैन्य नेतृत्व तैयार करने के उद्देश्य के प्रति समर्पित रहते हुए इस संस्था ने राष्ट्र निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान किया है।

डाक विभाग राष्ट्रीय भारतीय सैन्य कॉलेज (आरआईएमसी), देहरादून के शताब्दी वर्ष के अवसर पर स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/ विरूपण कैशे : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री से संदर्भित।

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	402945
Stamps Printed	:	402945
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य ₹ 5.00